1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 48, अंक 22 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 24 मार्च, 2025 से रविवार 30 मार्च, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

समस्त देशवासियों एवं भरतवंशियों को
वैदिक नव वर्ष (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) एवं
150वें आर्यसमाज स्थापना दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ

राष्ट्र और समाज के परिवर्तन के 150 वर्ष - आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष की
समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

## आर्य समाज स्थापना के 150 वर्ष

### इस ऐतिहासिक वर्ष को भव्य बनाने हेतु आर्य समाज मंदिर एवं आर्य संस्थाएं क्या करें?

- सभी आर्य संस्थाएं अपने भवनों को सुन्दरता से सजायें।
- अपने भवनों के बाहर एवं क्षेत्र के प्रमुख स्थलों पर आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष के होर्डिंग लगवाएं।

होर्डिंग का डिजाइन डाउनलोड करने के लिए निम्न लिंक पर जाएं www.bit.ly/30MarDesign या दिए गए कोड को स्कैन करें

- पुराने ध्वज बदल कर नए ओम ध्वज लगायें।
- रविवार 30 मार्च 2025 को वृहद यज्ञ एवं विशेष सत्संग का आयोजन करें।
- सत्संग में उपस्थित महानुभावों का सामूहिक फोटो लेवें और *#aryasamaj150* और अपनी आर्य समाज का नाम लिखकर सोशल मीडिया पर प्रचारित करें।
- आर्य समाज के बाहर बैनर लगा कर आम जनता को साहित्य एवं प्रसाद का वितरण करें।

★ 150वें आर्यसमाज स्थापना दिवस - 29-30 मार्च मुम्बई का सीधा प्रसारण aryasandeshtv/live पर देखें

सीधा प्रसारण आर्य सन्देश टी.वी. चैनल पर

दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में एक विशेष आयोजन

## 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष का शुभारम्भ

रविवार 6 अप्रैल, 2025 : प्रातः 9:30 बजे - तालकटोरा स्टेडियम नई दिल्ली

आप सब सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

देववाणी-संस्कृत

# सब हवियाँ परमात्मा को पहुँचती हैं

वेद-स्वाध्याय

**यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे। त्वे इद्धूयते हविः।।**

**-ऋ॰ 1।26।6; साम॰ ऊ 7।3।1**

**ऋषिः- आजीगर्तिः शुनःशेपः।। देवता - अग्निः।। छन्दः - गायत्री।।**

**शब्दार्थ- शश्वता तना** = सनातन और सिस्तृत हवि से **यत् चित् हि देवं देवम्** = यद्यपि हम भिन्न देवों का **यजामहे** = यजन करते हैं, **हविः** = परन्तु वह हवि **त्वे इत्** = तुझमें ही **हूयते** = हुत होती है, तुझे ही पहुँचती है।

विनय- हे देवाधिदेव, एक देव! इस जगत् में दो प्रकार के नियम काम कर रहे हैं। एक शश्वत् =सनातन नियम हैं जो सब काल और सब देशों में सत्य हैं, सदा लागू हो रहे हैं। दूसरे वे नियम हैं जो भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में ही असत्य हैं, जो स्थानिक हैं, स्वल्पकालिक होते हैं। शाश्वत नियमों के अनुसार चलने से हे प्रभो! तुम्हारा पूजन होता है और अशाश्वत अविस्तृत नियमों के अनुसार चलने से केवल उस-उस देव की तृप्ति होती है, उस-उस देव का यजन होता है, परन्तु हे प्रभो! परिमित अशाश्वत संसार में रहने वाले हम परिमित अशाश्वत शरीरधारी प्राणी तुम्हारा यजन भी सीधा कैसे कर सकते हैं? हम तुम्हारा यजन इन देवों द्वारा ही कर पाते हैं। फिर तुम्हारे यजन में और इन देवों के यजन में भेद यह है कि हम जो यज्ञ विस्तृत और सनातन दृष्टि से (भावना से) करते हैं वह तो इन देवों द्वारा तुम्हें पहुँच जाता है और जो यज्ञ परिमित भावना से करते हैं वह इन देवों तक ही पहुँचता है। यदि हम वायु शुद्धि के लिए अग्निहोत्र करते हैं तो यह अग्नि व वायुदेवता का यजन है, परन्तु यदि हम यही अग्निहोत्र संसार-चक्र को चलानें में अङ्गभूत बनकर करते हैं तो इस अग्निहोत्र से तुम्हारा यजन होता है। यदि हम विद्या का संग्रह अपने सुख के लिए करते हैं तो यह सरस्वती देवी का यजन है, परन्तु यदि हमारा यह ज्ञान तुम्हारी ही प्राप्ति के प्रयोजन से है तो यह सरस्वती देवी द्वारा तुम्हारा पूजन है। इसी प्रकार अपनी मातृभूमि देवी का पूजन भी केवल स्वदेशोद्धार के लिए या जगत्-हित के लिए दोनों प्रकार का हो सकता है। यहाँ तक कि यदि हमारे अपने देह की रक्षा, हमारा नित्य का भोजन खाना भी सचमुच तुम्हारे ही लिए है तो यह दीखनेवाली देह-पूजा भी असल में तुम्हारा ही यजन है। इसलिए सब बात भाव की है, हवि के प्रकार की है। हम सनातन और विस्तृत भावना से जिस भी किसी देव का यजन करते हैं, उन सब देवों के नाम से दी हुई हमारी हवि तुम्हें ही जा पहुँचती है। तब हमारा लक्ष्य तुम्हारी ओर हो जाता है। अतएव जब हमारा एक-एक कार्य शाश्वत् दृष्टि से, सनातन नियमों के अनुसार होता है तब हमारे कर्म से जिस किसी देव की पूजा होती दिखती है, वह सब पूजा असल में तुम्हारे ही चरणों में पहुँच जाती है।

**-ःसाभारः-**

**वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सम्पादकीय | मेरठ हत्याकाण्ड और बिगड़ते रिश्तों की समीक्षा

# सगे रिश्तों की निर्मम हत्या-बढ़ती हिंसा और क्रूरता के मायने

आपसी रिश्तों में हत्या कर उसके शव को टुकड़ों में काटना ये कैसी सनक है? क्या ऐसी दिल दहला देने वाली हत्याएं 'रिश्तों की मौत' नहीं हैं? यूपी के मेरठ जिले में एक पति की हत्या उसकी पत्नी ने कर दी। पति की हत्या करने के बाद अपने प्रेमी के साथ मिलकर शव को ठिकाने लगाने के लिए उसके चार टुकड़े कर दिए। 'रिश्तों की मौत' का ये अकेला मामला नहीं है, इससे पहले कई ऐसी खौफनाक वारदातें सामने आ चुकी हैं। आखिर, कोई इस हद तक कैसे गुजर जाता है कि अपने साथी की बेरहमी से हत्या करने से पहले एक बार भी नहीं सोचता? कभी बेवफा के शक में हत्या तो कभी महंगे शौक पूरे नहीं करने को लेकर हत्या। कभी पार्टनर से अनबन में जिगर के टुकड़े की हत्या तो कभी पिता का ही बेटी का कातिल बन जाना। आखिर ऐसा हुआ क्या है? रिश्तों में ये कैसी कड़वाहट जो कत्ल तक करा रही है?

जिस दौरान मेरठ में पत्नी मुस्कान और उसके प्रेमी साहिल द्वारा पति सौरभ की हत्या का मामला मीडिया में गूंज रहा था, उसी दौरान उत्तराखंड के ऊधम सिंह नगर में गेहूं के खेत में मृत मिले हरीश की मौत स्वाभाविक नहीं थी, बल्कि पत्नी ने प्रेमी के साथ मिलकर उसका मुंह दबाकर हत्या की थी। प्रेमी ने शव को कंधे पर लादकर गेहूं के खेत में फेंक दिया था।

मेरठ जैसी ही वारदात बनारस से भी सामने आई है, जहां एक लड़की ने नए ब्वॉयफ्रेंड से पुराने प्रेमी की हत्या करवा दी। बिजनौर में तो एक युवक मकेंद्र की हत्या उसकी पत्नी पारुल ने अपने आठ अन्य प्रेमियों से कराई । इसके अलावा कहीं बैंक मैनेजर ने सुपारी देकर पत्नी और बेटे की हत्या करा दी, तो कहीं टेल्को में बेटे ने पिता की हत्या के लिए सुपारी दी। घाटशिला में बेटे ने माता-पिता को मार डाला, तो कदमा में भतीजे ने चाची का खून कर दिया। इसके अलावा कानपुर में तो पिछले साल 2 महीने में पतियों द्वारा 5 पत्नियों की हत्या। आखिर यह कैसे समाज का निर्माण हो रहा है? जहाँ इंसान अब अपने घर में भी सुरक्षित नहीं है?

एक दौर था जब व्यक्ति खुद को अपने घर में सबसे अधिक सुरक्षित महसूस करता था। अपनों के बीच जहाँ उसे लगता था, चाहें कुछ भी हो जाए, उसका परिवार, उसकी पत्नी, उसके बच्चे, बच्चों को लगता था उनके माता-पिता के बीच वह सुरक्षित हैं। संयुक्त परिवार होते थे, एक-दूसरे के सहयोगी, एक-दूसरे के रक्षक।

किन्तु अब छोटे परिवार हो गए हैं और रिश्ते सिकुड़ गए हैं। जो बचें हैं उनमें शक का दीमक लग गया है। शक न सिर्फ रिश्तों का कत्ल करता है, बल्कि अपनों का कत्ल तक करा देता है। कभी ईगो के लिए अपने ही जिगर के टुकड़े की हत्या, तो कभी कर्ज के बोझ से मुक्ति की चाह में पलायनवादी कायरता में फूल सी नाजुक बेटी का कत्ल। कभी शौक और सपने पूरे नहीं होने पर पति का मर्डर। अधिकांश कत्ल के पीछे एक चीज हमेशा मिलेगी: छोटा परिवार, यानी मैं, मेरी पत्नी और मेरा बच्चा बेंगलुरु में एक शख्स को पत्नी के चरित्र पर शक था, तो सोते वक्त लकड़ी के लट्टु से उसे कूचकर मार डाला। नॉर्थईस्ट दिल्ली में एक व्यक्ति ने बेवफाई के शक में पत्नी को मार डाला। पति दुबई घुमाने नहीं ले गया, तो पत्नी ने उसे मार डाला। रिश्तों के कत्ल की खबरों से आजकल अखबार अटे पड़े रहते हैं। इंटरनेट पर सर्च कीजिए, ऐसी खबरों का अंतहीन सिलसिला दिखेगा। पिछले कुछ दिनों में घटी इन कुछ घटनाओं को ही देखिए।

*व्यक्ति-परिवार, समाज और देश इस प्रक्रिया से मानव समाज का निर्माण होता है। परिवार न सिर्फ हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है, बल्कि हमारा सब कुछ होता है। यह वो मिट्टी है जो हमारी जड़ों को आकार देती है और हमें आगे बढ़ने और बेहतर बनने में मदद करती है। परिवार वो चीज है जिससे मकान एक घर बनता है। अब सब कुछ बदल चुका है। परिवार के मामले में देश और समाज का परिदृश्य बदलता जा रहा है। अब इस देश में ज्वाइंट परिवारों की जगह लोग न्यूक्लियर फैमिली बन चुके हैं, जहाँ रिश्ते अविश्वास और कत्ल का कारण बन चुके हैं। सोचिए, सौरभ, अगर अपने परिवार जिसमें माता-पिता, बहन, भाई, भाभी, दादी के साथ होता, तो क्या उसकी पत्नी मुस्कान अपने प्रेमी संग मिलकर इस भयावह कांड को घर के अंदर अंजाम दे पाती?*

पुणे के पॉश इलाके वानावाड़ी की एक सोसाइटी में एक बिजनसमैन को अपनी पत्नी को दुबई घुमाने से इनकार करने की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। थोड़े समय पहले गोवा में सूचना सेठ नाम की एक महिला सी ओ ने 4 साल के बेटे को सिर्फ इसलिए मार डाला कि वह नहीं चाहती थी कि उसका पति बच्चे से मिले। पति-पत्नी तलाक की प्रक्रिया से गुजर रहे थे और बच्चे की कस्टडी को लेकर दोनों में कानूनी लड़ाई चल रही थी। अदालत ने आदेश दिया था कि वह हर रविवार को बेटे को पिता से मिलाएगी। इससे बचने के लिए वह बेंगलुरु से गोवा चली गई ताकि रविवार को बच्चे को उसके पिता से न मिलवाना पड़े। उसके ईगो ने उसे इतना अंधा बना दिया कि उसने ममता और वात्सल्य को भी कलंकित कर दिया। उसका ईगो ममता पर भारी पड़ गया और उसने अपने ही हाथों अपनी कोख उजाड़ दी। आखिर रिश्तों को ये हो क्या गया है?

व्यक्ति-परिवार, समाज और देश इस प्रक्रिया से मानव समाज का निर्माण होता है। परिवार न सिर्फ हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है, बल्कि हमारा सब कुछ होता है। यह वो मिट्टी है जो हमारी जड़ों को आकार देती है और हमें आगे बढ़ने और बेहतर बनने में मदद करती है। परिवार वो चीज है जिससे मकान एक घर बनता है।

अब सब कुछ बदल चुका है। परिवार के मामले में देश और समाज का परिदृश्य बदलता जा रहा है। अब इस देश में ज्वाइंट परिवारों की जगह लोग न्यूक्लियर फैमिली बन चुके हैं, जहाँ रिश्ते अविश्वास और कत्ल का कारण बन चुके हैं। सोचिए, सौरभ, अगर अपने परिवार जिसमें माता-पिता, बहन, भाई, भाभी, दादी के साथ होता, तो क्या उसकी पत्नी मुस्कान अपने प्रेमी संग मिलकर इस भयावह कांड को घर के अंदर अंजाम दे पाती? सामाजिक शोध बताते हैं कि जो बच्चे संयुक्त परिवारों में पलते हैं, उनमें कुछ खास मूल्य होते हैं, जैसे कि एक-दूसरे पर निर्भरता, सहनशीलता, करुणा आदि।

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ सन्देश

# उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है तनाव मुक्ति

आधुनिक परिवेश में तनाव एक ताकतवर समस्या बनकर मानव समाज में लगातार फैल रहा है। हालांकि एक सीमा तक जीवन विकास के लिए तनाव आवश्यक भी है लेकिन अधिक मात्रा में तनाव उत्पन्न हो जाए तो यह एक भयंकर बीमारी का रूप ले लेता है और इससे अनेक जानलेवा बीमारियों का जन्म हो जाता है। मनोचिकित्सकों का मानना है कि लगातार तनाव पूर्ण जीवन जीने वाले लोगों को ब्लड़ प्रेसर, मधुमेह, हार्ट और अनेक अन्य असाधारण बीमारियां घेर लेती हैं। क्योंकि मनुष्य जैसा सोचता है, करता है वैसा ही उसका जीवन बन जाता है। तनाव के कारण मनुष्य की सोच ही नकारात्मक हो जाती है। अगर कोई व्यक्ति उसके लिए अच्छा भी सोचता है, करता है तो उसे उस पर सरलता से विश्वास नहीं होता और तनाव से भरा हुआ व्यक्ति अपने शुभचिंतक से भी भयभीत होने लगता है। ये व्यक्ति उसकी प्रशंसा करे, उसके लिए अच्छा बोले, उसके नकारात्मक स्वभाव को बदलने का प्रयास करे तो भी तनाव से भरे हुए व्यक्ति को यही लगता है कि यह मेरे खिलाफ साजिश कर रहा है, इसमें जरूर इसकी कोई चलाकी है। दिखाने के लिए ये मेरे लिए कुछ अच्छा करना चाहता है लेकिन अंदर से तो मेरा बुरा चाहता है। क्योंकि तनाव के समय शरीर में जो रासायनिक स्राव या भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है, उससे शरीर और मन में बचैनी उत्पन्न होने लगती है। तनाव का सबसे ज्यादा प्रभाव मनुष्य के दिमाग पर पड़ता है। उसकी सोचने-समझने की शक्ति क्षीण होने लगती है। आदमी अपने और पराए को समझने में गलती करने लगता है। उसे अच्छी बात भी बुरी लगती है और बुरी बात अच्छी और फायदे वाली लगने लगती है।

*आर्य संदेश में प्रकाशित स्वास्थ्य संदेश के कॉलम में जो स्वास्थ्य संबंधी लेख, मौसम परिवर्तन में सावधानी बरतने, आसन, प्रणायाम, आहार, उचित जीवन शैली अथवा औषधियों से होने वाले लाभ चिकित्सा पद्धति आदि की जानकारी दी जाती है, तो वह केवल ''सर्वे सन्तु निरामया'' की परोपकारी भावना तक ही सीमित है। अतः आर्य संदेश में प्रकाशित व स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी का लाभ तो लें किंतु अगर कोई अस्वस्थ्य है तो अपने चिकित्सक से ही उपचार कराए। -संपादक*



**तनाव के समय शरीर में जो रासायनिक स्राव या भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है, उससे शरीर और मन में बचैनी उत्पन्न होने लगती है। तनाव का सबसे ज्यादा प्रभाव मनुष्य के दिमाग पर पड़ता है। उसकी सोचने-समझने की शक्ति क्षीण होने लगती है। आदमी अपने और पराए को समझने में गलती करने लगता है। उसे अच्छी बात भी बुरी लगती है और बुरी बात अच्छी और फायदे वाली लगने लगती है।**

### तनाव के प्रकार

तनाव के कई प्रकारों में शारीरिक तनाव की एक अवस्था यह भी है कि जब किसी मनुष्य के मन में इस बात का भय हो कि कोई व्यक्ति या कोई चीज उसे शारीरिक रूप से चोट पहुंचा सकती है, तब उसका शरीर स्वाभाविक रूप से किए गए एक्सन पर पूरा रिएक्सन करता है ताकि वह उस खतरनाक परिस्थिति से उबर कर जीने में सक्षम हो जाए या पूरी तरह से उससे पलायन ही कर जाए। यह जीवन रक्षक रूप का तनाव है।

### भावनात्मक तनाव

सब कुछ मनुष्य के मनचाहा कभी नहीं होता। अनेक बार अनचाहा और विपरीत वातावरण में मनुष्य को एडजेस्ट करना आना ही चाहिए। प्राय: जब हम ऐसी चीजों के प्रति डर जाते हैं।

*-क्रमश:*

# परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है। सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक के भारतवर्ष का वैभव काल

**गतांक से आगे -**

सारे विश्व के वेदों के महान् विद्वान् 6 वर्षों में स्थानीय स्तर पर और प्रत्येक 12 वर्षों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एकत्र होते थे और एक-दो महीने जमकर वाद-विवाद, शास्त्रार्थ, प्रवचन, और उपदेश होते थे। लोग, वर्षों की शंकाएं लेकर आते थे और वेदों के प्रति अगाध आस्था और श्रद्धा लेकर जाते थे, **''इन्हीं मेलों को कुम्भ मेला कहा जाता था।''** मंथन का मतलब **समुद्र का मंथन नहीं, ज्ञान का मंथन** होता था। सभी कुम्भ मेले वहीं लगते थे जहां बड़ी नदियां हैं, क्योंकि इन्हीं स्थानों पर बड़ी-बड़ी वेद पाठशालाएं होती थीं, क्योंकि वेद में ऐसी पाठशालाएं बनाने के लिए ऐसे ही स्थानों के चयन का विधान बताया गया है। जिस स्थान पर कुम्भ लगते थे उसे विद्वानों का संगम भी कहा जाता था और चूंकि ज्ञान शक्ति से सब पापों से तरना लिखा है, वह ज्ञान उन्हीं कुम्भ मेलों को ही प्राप्त होता था और इन्हीं मेलों को कुम्भ कहा जाता था। इसीलिए कुम्भ के स्नान से तरना प्रसिद्ध हो गया। तरना तो ज्ञान प्राप्ति से था पर चलते-चलते कुम्भ स्नान से ही प्रसिद्ध हो गया। ये ही मेले हमारी ज्ञान परम्परा के रक्षक थे। अब मेले तो रह गए, ज्ञान रक्षा की बात कहीं अधूरी है अभी।

आशा है आप कुम्भ मेलों की उपयोगिता और कारण ठीक से समझ पाए होंगे। ये ही कारण था कि लगभग दो अरब वर्षों में भी वेद के एक भी मन्त्र में मिलावट होने का कारण नहीं बन सका। जबकि महाभारत, गीता, रामायण, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में कुछ ही समय में आसानी से अनेक मिलावटें कर दी गईं।

अब बात करेंगे भारत के प्राचीन वैभव की, तो आप देख-सुनकर हैरान अवश्य होंगे कि सन् 1000 से लेकर सन् 1700 तक के उपलब्ध आकड़ों के अनुसार भारत विश्व की अर्थव्यवस्था का सिरमौर था अर्थात् प्रथम स्थान पर था। सोचें, यदि केवल एक हजार वर्ष पूर्व भारत की आर्थिक सम्पन्नता इतनी थी तो 5000 वर्ष पहले हुए महाभारत युद्ध से पूर्व भारत की आर्थिक सम्पन्नता कितनी होगी ?

| Years | 1000 | 1500 | 1600 | 1700 |
|---|---|---|---|---|
| India | 33,750 | 60,500 | 74,250 | 90,750 |
| China | 26,550 | 61,800 | 96,000 | 82,800 |
| West Europe | 10,165 | 44,345 | 65,955 | 83,395 |
| World Total | 116,790 | 247,116 | 329,417 | 371,369 |

In the 18th century, Mughals were replaced by the Marathas in much of central India while the other small regional kingdoms who were mostly late Mughal tributaries such as the Nawabs in the north and the Nizams in the south. The British imperial.

भारत प्राचीन काल का सर्वाधिक सम्पन्न राष्ट्र रहा और सम्पन्नता का पैमाना भी ऐसा कि जिसके आस-पास भी कोई नहीं था। महाभारत के युद्ध से पूर्व के आर्यावर्त की यह स्थिति थी—धन, सम्पत्ति, वैभव, सोना, चांदी, जवाहरात, उर्वरा भूमि, पशु, कृषि, औषधि ज्ञान, पुस्तकालय, उद्योग, व्यापार आदि में चरम पर था। यदि आज से एक हजार वर्ष पहले के आंकड़ों को भी देखें यानि महाभारत के चार हजार वर्ष बाद का तो यह चार्ट आपका मार्गदर्शन करेगा कि पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था का लगभग एक तिहाई धन केवल भारत के पास ही था..... और पिछले एक हजार वर्ष से निरन्तर छोटा होते रहने और लुटेरों द्वारा अथाह लूट के पश्चात् भी विश्व की कुल अर्थव्यवस्था का 10 प्रतिशत से कुछ कम हिस्सा भारत के पास आज भी है।

हमें इतिहास में यह नहीं पढ़ाया गया कि किसने कितना लूटा भारत को। (हम लूट उसे ही कहेंगे जो धन यहां से विदेशों में चला गया।) हमें यह तो पढ़ाया ये लोग आए पर यह नहीं पढ़ाया कि ये यहां करने क्या आए थे ?

सिकन्दर - मिनेंडर - शक-हूण
मोहम्मद बिन कासिम
महमूद गजनी ?

ये सब अपने-अपने समय के लुटेरे ही थे जो भारत के शानदार वैभव को सुनते थे और उसको लूटने की इच्छा रखकर ही यहां हमले करते थे।

एक अनुमान के अनुसार महमूद गजनबी ने केवल सोमनाथ मन्दिर से आज के 78 अरब रुपये मूल्य का 1300 टन से ज्यादा सोना और न जाने कितने हीरे जवाहरात लूटे। ध्यान दें कि यह उसकी केवल **'एक लूट'** का आंकड़ा है, कुल 17 हमले उसने हमारी सम्पत्ति को लूटने के लिए किए।

नादिशाह, तैमूर लंग, मोहम्मद गौरी, खिलजी, लोधी न जाने कितने शासकों ने लगातार, अनरवत लूटा। हर मुगल शासक ने भरपूर मात्रा में धन अपने पैत्रक स्थानों पर हर वर्ष भेजा। एक छोटा-सा आंकड़ा देखें कि हर वर्ष हज पर जाने वाले हज दस्ते के द्वारा मक्का-मदीना के लिए 5 लाख से 10 लाख रुपये तक भेजे जाते थे। उस समय जब भारत में नाई की औसत कमाई महीने में 50 पैसे थी। - **क्रमश:**

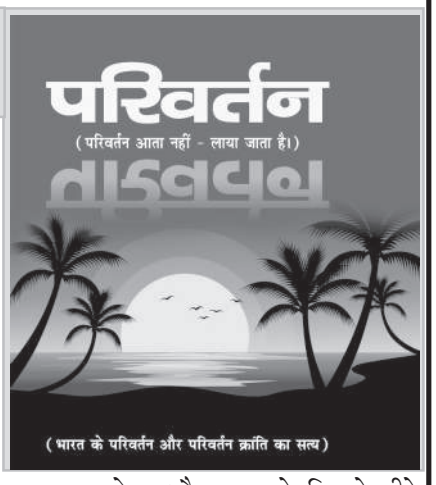




पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

24 मार्च, 2025
से
30 मार्च, 2025

### समस्त आर्यसमाजों एवं संस्थाओं की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज का मिलनपर्व

# आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह उल्लास और उमंग के साथ सम्पन्न

## सबसे छोटे 2 माह के बच्चे और सबसे वयोवृद्ध 106 वर्ष की आर्य महिला, नव विवाहित दम्पति एवं समारोह में पधारे सबसे बड़े परिवार को किया सम्मानित

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों की श्रंखला में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से होली के पावन पर्व पर सभा प्रधान, धर्मपाल आर्य जी की अध्यक्षता में 20वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह का भव्य आयोजन 13 मार्च 2025 को रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कनॉट प्लेस, राजा बाजार में अत्यंत हर्षोल्लास के वातावरण में समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर नवसस्येष्टि यज्ञ, मधुर भजन, बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम और आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास पर आधारित प्रेरक नाटिकाओं का मंचन किया गया। इस कार्यक्रम में दिल्ली की सभी आर्य समाजों, आर्य परिवारों के हर आयु वर्ग के हजारों आर्य जनों ने भाग लिया।

होली के इस भव्य आयोजन की शोभा देखते ही बनती थी, सुन्दर फूलों से सुसज्जित यज्ञशाला, मंच पर होली पर्व की प्रेरणा देते हुए बैकड्राप और उस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्रेरक नाटिकाओं का मंचन करते हुए नन्हे-मुन्ने तथा किशोर बालक-बालिकाएं, हजारों की संख्या में उपस्थित आर्य समुदाय का मन मोहित कर रहे थे। कार्यक्रम में स्वामी प्रणवानंद जी, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, हरियाणा सभा के प्रधान श्री देशबन्धु मदान जी, शकूर बस्ती, रानी बाग के विधायक श्री करनैल सिंह जी, निगम पार्षद श्री अजय रवि हंस जी, डी.ए.वी के डायरेक्टर, डॉ वीर सिंह जी, आर्य समाज ह्यूस्टन, अमेरिका से पधारे श्री देव महाजन जी, दिल्ली सभा के समस्त अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य, आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य के अधिकारी,अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के अधिकारी, समस्त वेद प्रचार मंडलों के अधिकारी, आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी उपस्थित थे। श्री विनय आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज भारत सरकार द्वारा लाए जाने वाले वक्फ बोर्ड बिल का पूरा समर्थन करता है, उपस्थित अधिकारियों और आर्यजनों ने हाथ उठाकर इसमें अपनी सहमति प्रकट की, श्री करनैल सिंह जी, विधायक ने आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती के सेवाकार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि दिल्ली में तो वक्फ बोर्ड रहेगा ही नहीं, उन्होंने आगामी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में अपनी सहभागिता और सहयोग करने का आश्वासन दिया, श्री देव महाजन जी ने आर्य समाज द्वारा संचालित आर्य प्रगति स्कॉलरशिप की योजना को युवाओं के उज्ज्वल भविष्य का आधार बताया और दिल्ली सभा के सेवा कार्यों की सराहना की। इस अवसर पर सभा महामंत्री जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी के विषय में कहा कि यह

- शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

### ब्र.राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान-2025 से सम्मानित हुए गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनञ्जय शास्त्री

- प्रवेश द्वार पर चन्दन के तिलक से स्वागत
- नव सस्येष्टि यज्ञ में यजमानों ने दी श्रद्धापूर्वक आहुति
- हर आयु वर्ग के लोग भारी संख्या में हुए सम्मिलित
- सुन्दर रंगोली और सेल्फी स्टैंड पर फोटो हेतु लगी भीड़
- स्वादिष्ट मधुर ठंडाई का किया सभी ने सेवन
- वक्फ बोर्ड बिल का आर्य समाज ने किया समर्थन
- सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं नाटक विशेष आकर्षण के केंद्र
- रंग-बिरंगे फूलों की होली से सराबोर हुए आर्य नर, नारी, बच्चे और बुजुर्ग

### नव सस्येष्टी यज्ञ - सांस्कृतिक कार्यक्रम - नाटिका मंचन एवं उपस्थित आर्यजनों से भरा विद्यालय का प्रांगण

## विभिन्न सम्मान - अतिथियों का स्वागत एवं फूलों की होली से सराबोर होते आर्यजन

## 150वें स्थापना वर्ष के कुछ अति विशेष प्रकाशन

### आइए, सहभागी और सहयोगी बनें

**मैं आर्य समाजी कैसे बना ?**

इस विषय में सभी आर्यजन अपने या अपने परिवार के पहले पहल आर्यसमाजी बनने की रोचक घटना और कारण को लिखकर अवश्य भेजें। सर्वश्रेष्ठ 150 घटनाओं की ऐतिहासिक पुस्तक का प्रकाशन किया जाएगा। रचना अधिकतम 500 शब्दों में ही लिखकर भेजें।

**आर्य समाजी जेलों में**

इस पुस्तक में उन सभी नामों का संकलन करने का विचार है, जो आजादी के आन्दोलन में, हैदराबाद सत्याग्रह में, हिन्दी सत्याग्रह में, गौरक्षा आन्दोलन में, सिन्ध सत्यार्थ प्रकाश सत्याग्रह, पटियाला केस आदि में समर्पित महानुभाव - जिनको किसी भी सज्जन का नाम पता लगे-किस जेल में गए थे- किस कारण से गए थे तो शीघ्र ही अवश्य लिखकर भेजें।

**आर्य समाज Today**

वर्तमान आर्य समाज की संस्थाओं की सटीक जानकारी एक स्थान पर एकत्र करने हेतु। इस विशेष प्रकाशन को किया जा रहा है, इससे पूर्व आर्य संस्थाओं से जुड़ी जानकारियों का प्रकाशन शताब्दी समारोह के समय किया गया था। समस्त आर्य समाजें अपने समाज की गतिविधियों सहित विशेष जानकारियां अवश्य भेजें।

**संस्मरण एवं श्रद्धांजलि**

अपने आत्मीय महानुभावों का स्मरण, अपने पूज्य माता-पिता/गुरु/आचार्य जिन्होंने आपके जीवन में आर्यसमाज का प्रकाश करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनको श्रद्धांजलि देते हुए परिचय फोटो सहित। ये प्रकाशन सहयोग राशि के साथ होगा। इसका एक भाग लगभग - 400 पृष्ठ का होगा।
**एक पृष्ठ पर एक परिचय 5000/- रूपये की अल्प राशि से प्रकाशित होगा - दो प्रतियां नि:शुल्क दी जाएंगी।**

**ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन स्मारिका**

200वीं जयन्ती और 150वें स्थापना दिवस के देश-विदेश में हुए विशेष आयोजनों की संक्षिप्त रिपोर्ट, फोटोग्राफ्स, प्रमुख व्यक्तियों के भाषण, विशेष घटनाएं आदि का संग्रह, प्रकाशन करना इस प्रकाशन का उद्देश्य रहेगा।

**आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर आर्य सन्देश विशेषांक हेतु ऐतिहासिक लेख एवं घटनाक्रमों पर आधारित प्रेरक प्रसंग अवश्य भेजें**

**उपरोक्त ऐतिहासिक प्रकाशनों से जुड़ी जानकारी, लेख एवं अन्य सामग्री डाक/ईमेल अथवा व्हाट्सएप्प पर शीघ्र-अतिशीघ्र भेजें-**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 - हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Email : aryasabha@yahoo.com; 9540097878

## 200वीं जयन्ती की डाक टिकट

## अधिकाधिक खरीदकर प्रयोग करें

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य संगठनों, विद्यालयों, गुरुकुलों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं से निवेदन है कि यह डाक टिकट स्मृति रूप में अपने पास रखने तथा जन साधारण में प्रचार-प्रचार के लिए अधिकाधिक संख्या में खरीदकर प्रचार करें, अपने दैनिक पत्र-व्यवहार, स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड डाक आदि में प्रत्येक स्थान पर उपयोग करें, जिससे कि हजारों-लाखों आखों और हाथों से होते हुए यह प्रचारित हो और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म वर्ष की स्मृति रूप में सुरक्षित रहे। आप अपनी संस्था के लिए जितनी डाक टिकटें प्राप्त करना चाहते हैं, कृपया उसकी संख्या के अनुसार अपनी सहयोग राशि 5/- प्रति डाक टिकट की दर से निम्नांकित बैंक खाते में नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम जमा करें अथवा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजें।

**Delhi Arya Pratinidhi Sabha A/c No. : 2009257009039**
**IFSC :CNRB0002009** Canara bank New Delhi Branch

साप्ताहिक स्वाध्याय

# राजपूताना में कार्य

*गतांक से आगे-*

चरित में स्वाधीनता की बू थी। उस समय से महर्षि की मृत्यु-पर्यन्त दोनों महानुभावों का शिष्य-गुरु भाव अटूट और सन्निहित रहा। चित्तौड़गढ़ की एक और घटना भी स्मरणीय है। महर्षि दयानन्द अपने कुछ भक्तों के साथ घूमने जा रहे थे। रास्ते में एक वटवृक्ष के नीचे दो-तीन मूर्तियां थीं। जब पास से गुजरे तो महर्षि ने अपना सिर झुका दिया। इस पर एक शिष्य ने कहा कि 'महाराज! चाहे देवमूर्ति का कितना खण्डन कीजिये, पर उसका ऐसा प्रभाव है कि पास जाकर सिर झुक ही जाता है।' इस पर महर्षि खड़े हो गए। पास ही छोटे-छोटे बालक खेल रहे थे। उनमें एक चार वर्ष की नंगी बालिका भी थी। महर्षि ने उधर इशारा करते हुए कहा कि 'देखते नहीं हो, यह मातृशक्ति है, जिसने हम सबको जन्म प्रदान किया है।' सब शिष्यों पर इस वाक्य का अपूर्व प्रभाव हुआ। महर्षि के मन में स्त्री जाति के प्रति वैसा घृणा का भाव नहीं था, जैसा प्राय: संन्यासी या विरक्त दिखाया करते हैं। जो मनुष्य एक चार वर्ष की बालिका में माता की भावना कर सकता है, वह स्त्री जाति के प्रति कैसी प्रतिष्ठा का भाव रखता होगा और उसका हृदय कितना पवित्र होगा, इसकी कल्पना ही की जा सकती है।

1882 के प्रारम्भ में महर्षि जी को बम्बई आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर जाना था। जब विदा होने का समय आया तो महाराणा सज्जनसिंह ने महर्षि जी से प्रार्थना की कि 'भगवन! उदयपुर में यथासम्भव शीघ्र ही दर्शन दीजिएगा।' महर्षि ने वादा भी कर लिया।

बम्बई का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से हुआ। यहां की दो घटनाएं वर्णन योग्य हैं। प्रथम यह कि यहां महर्षि जी ने थियोसॉफिकल सोसाइटी के आर्यसमाज से पृथक् होने की सूचना दी। दूसरी यह कि बम्बई आर्यसमाज ने अपने पहले से निश्चित किये विस्तृत नियमों को छोड़कर लाहौर आर्यसमाज के स्वीकृत नियमों को स्वीकार कर लिया।

यहां इन्हीं दिनों पादरी यूसुफ ने एक व्याख्यान दिया, जिसमें यह सिद्ध करने का यत्न किया कि ईसाई धर्म ही ईश्वरीय है, शेष सब धर्म अनीश्वरीय हैं। महर्षि जी ने इस व्याख्यान के उत्तर में पादरी को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। पादरी महाशय शास्त्रार्थ के लिए तैयार न हुए। महर्षि जी ने सार्वजनिक व्याख्यान देकर पादरी महाशय के दावे का भली प्रकार खण्डन कर दिया। बम्बई से चलकर खण्डवा, इन्दौर और रतलाम में प्रचार करते हुए महर्षि दयानन्द 11 अगस्त 1882 को फिर उदयपुर पहुंच गए। ठहरने का प्रबन्ध महाराणा जी की ओर से था। सज्जन-निवास बाग में महर्षि का आसन जमाया गया।

महर्षि दयानन्द प्राय: कहा करते थे कि प्रजा का सुधार राजा के सुधार पर अवलम्बित है। जहां कहीं भी महर्षि को अवसर मिलता, शासकों के सुधार में यत्नवान् रहते थे। उदयपुर में पहुंचकर आपने महाराणा के जीवन में परिवर्तन लाने का उद्योग किया। महर्षि को राजपूतों पर बड़ा विश्वास था और उनमें से भी प्रताप के वंशजों पर तो विशेष आशा थी। थोड़े ही समय में आपने महाराणा सज्जनसिंह के जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन पैदा कर दिया। आजकल के भारतीय रईसों में जितने दोष होते हैं, महाराणा में महर्षि जी के आने से पूर्व वे सभी थे। विलासिता, शराब, वेश्यागमन आदि कुवृत्तियों और मूर्ति-पूजा, बलिदान आदि के भ्रमात्मक विश्वासों ने महाराणा को घेरा हुआ था। महर्षि जी के उपदेश से बहुत शीघ्र ही सुधार होने लगा। महाराणा ने हर रोज महर्षि जी से पढ़ना प्रारम्भ किया। उन्हें संस्कृत का कुछ अभ्यास पहले से था। शास्त्रों के पढ़ने में उन्हें कोई विशेष दिक्कत न हुई। महर्षि जी ने उन्हें विशेष आग्रह से मनुस्मृति का राजप्रकरण पढ़ाया। वहां राजा के धर्मों का अनुशीलन करके महाराणा की आंखें खुल गई। उन्होंने जीवन का सुधार आरम्भ कर दिया।

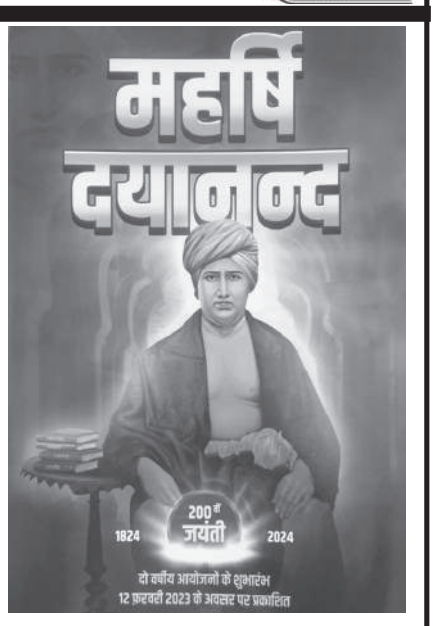




महाराणा ने अपना समय-विभाग निश्चित कर दिया। प्रात: काल उठने लगे, संध्योपासन नियमपूर्वक होने लगा। शराब और वेश्यागमन का त्याग कर दिया। राज्य कार्य से शेष समय में महाराणा सत्संग और महर्षि से शास्त्रों का अध्ययन करते। धीरे-धीरे महाराणा ने वैशेषिक, पातञ्जल और योगदर्शन पढ़ लिये और प्राणायाम की विधि भी महर्षि से सीख ली।

**-क्रमश:**

**पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।**

**Continue From Last Issue**

# Works in Rajputana

From that time till the death of the sage, the disciple-guru-feeling of both the great men remained unbroken and continuous.

Another incident of Chittorgarh is also worth remembering. Rishi Dayanand was going for a walk with some of his friends. There were two or three idols placed under a banyan tree on the way. The sage bowed his head when he passed by. On this a disciple said that Maharaj! No matter how much you blaspheme the deity, but it has such an effect that the head bows down when you approach it. The sages got angry on this. Small children were playing nearby. There was also a four-year-old naked girl among them. Pointing there, the sage said, "Don't you feel'', it is the mother who has given birth to all of us." This sentence had an amazing effect on all the disciples. The sage did not have such a feeling of hatred towards the female caste, which is often shown by the sanyasins or virtats. The person who can feel the feeling of mother in a four year old girl, what kind of respect he would feel towards the female race and how pure his heart would be, it can only be imagined!

In the beginning of 1882, Swamiji had to go to the annual festival of Bombay Aryasamaj. When it was time came to leave, Maharana Sajjan Singh prayed to Swami ji that please visit Udaipur as soon as possible.' The sage also made a promise.

Bombay Annual festival of Bombay Arya Samaj took place with great fanfare. Two incidents are worth mentioning here. Firstly, here Swamiji informed about separation of Theosophical Society from Aryasamaj. Second, Bombay Aryasamaj accepted the rules of the Lahore Aryasamaj leaving the detailed rules it had already decided.

Here in these days Pastor Joseph delivered a lecture, in which he tried to prove that Christianity is divine, all other religions are ungodly. In response to this lecture, Swami ji challenged the priest for debate. The pastor did not get ready for the debate. Swamiji gave a delivere lecture and rebutted the claim of the pastor very well. Rishi Dayanand again reached Udaipur on August 11, 1882, while campaigning in Andwa, Indore and Ratlam from Bombay. The arrangement for stay was from Maharana ji. The seat of the sage was set up in the Sajjan Niwas garden.

Rishi Dayanand often used to say that the improvement of the people depends on the improvement of the king. Wherever the sage got the opportunity, he was diligent in the reformation of the rulers. After reaching Udaipur, he tried hard to bring change in the life of Maharana. The sage had great faith in the Rajputs and even among them he had special hopes on Pratap's descendants. In a short span of time, he created a wonderful change in the life of Maharana Sajjan Singh. Modern Indian nobles have all the faults, they were all there before the arrival of Swami ji in Maharana. The Maharana was surrounded by vices like luxury, alcohol, prostitution etc. and delusional beliefs of idol-worship, sacrifice etc. Swami ji's advice started improving him very soon. Maharana started getting lessons from Swamiji everyday. He already had some practice of Sanskrit. He did not face any special problem in reading the scriptures. Swamiji taught him the Rajprakaran of Manusmriti with special request. There the Maha rana's bowels melted by following the king's dharma. He started improving his life. Maharana fixed his time-division. He started getting up in the morning and evening worship regularly. He gave up alcohol and prostitution. In the remaining time from state work, Maharana used to study scriptures from satsang and sage. Gradually, Maharana read Vaisheshika, Pataxajal and Yogdarshan and also learned the method of Pranayama from the sage. Here in those days Pandit Vishnulal Mohanlal ji was among the workers of Pandda state.

To be Continue............

**With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339**

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

पृष्ठ 2 का शेष

## सगे रिश्तों की निर्मम हत्या-बढ़ती हिंसा .....

इन मूल्यों से बच्चों को जीवन की अलग-अलग परिस्थितियों का सामना करने की समझ आती है। छोटा परिवार होने से बच्चों को बड़ों से को गाइड नहीं मिलती और न वे अपने साथ घटित अनुचित बातों की चर्चा कर पाते हैं, जिससे उनके मार्ग से भटकने के अवसर बढ़ गए हैं। साथ ही, पहले संबंधियों के रहते बहुत सी समस्याओं से आराम से निपट लेते थे, पर अब अकेले जूझना पड़ता है, जिसमें अनुभवहीनता के कारण कई बार हानि उठानी पड़ती है।

इन सबके बीच आज रिश्तों में बढ़ती दूरियों का एक कारण सोशल मीडिया है, जो बहुत बड़ा जिम्मेदार है। अनजान लोगों से चैटिंग करना, घंटों उनसे बातचीत का असर दिलो-दिमाग पर पड़ता है। लोग काल्पनिक दुनिया में रहते हैं। अपनों के बीच संवादहीनता शुरू हो जाती है। रिश्तों की गर्माहट खत्म हो जाती है। पति का पत्नी को टोकना या पत्नी द्वारा पति को टोकना बहस, मारपीट, हिंसा या कत्ल तक चला जाता है। जबकि अभी तक हमारे देश में परिवार को सबसे ज्यादा अहमियत दी जाती है। लोग अपने परिवार के लिए क्या नहीं कर गुजरते। कभी परिवार की ख़ुशी के लिए अपनी निजी ख़ुशियों की क़ुर्बानी देते हैं, तो कभी परिवार के साथ मिल-जुलकर रहने और परिवार को ख़ुश रखना ही अपनी जिंदगी का मक़सद बना लेते हैं। पर पिछले कुछ वर्षों में देखा गया है कि भूमंडलीकरण की वजह से देश बड़े स्तर पर परिवार टूट रहे हैं।

छोटे परिवार संस्कारों की कमी, निहित स्वार्थ, भौतिकवादी सोच और नशे की लत इंसान को क्रूर बना रही हैं। सगे संबंधी जब रिश्तों का कत्ल करते हैं, तो ऐसी घटनाओं की हर तरफ भर्त्सना होती है। इस बात से समाजशास्त्री और मनोवैज्ञानिक भी इनकार नहीं कर रहे हैं। कुशीनगर जिले में पिछले तीन महीने के भीतर अपनों ने ही अपनों की हत्या कर दी है। इन घटनाओं में पति-पत्नी का पवित्र रिश्ता भी दागदार हुआ है, तो बाप बेटे के हत्यारे बन गए हैं। अपनों का कत्ल करने में हत्यारे बन चुके अपनों के हाथ तक नहीं कांप रहे हैं। अपने ही अपनों के लिए हैवान बन रहे हैं।

*-संपादक*


**SPECIAL REQUIREMENT**

1. DTP Operator -2
2. Hindi-English Typist -2
3. Social Media Specialist -2

**Required for OTT Channel**

1. Video Cameraman
2. Video Editor (0Premiere Pro)
3. Creative Director
4. Driver
5. IT Project Manager B.Tech/M.Tech

Internships are also available in various departments.

Interested Candidates should send their resume on e-mail
daps.resumes@gmail.com

**विदेश में आर्य पुरोहितों की आवश्यकता**

- वैदिक विधि से अंग्रेजी भाषा में 16 संस्कारों को कराने का अनुभव
- वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के मर्मज्ञ विद्वान प्रवक्ता को वरीयता दी जाएगी

सूचना प्राप्ति के उपरांत तुरन्त अपना बायोडेटा निम्नलिखित ईमेल पर सेंड करें।
daps.resumes@gmail.com


पृष्ठ 5 का शेष

## आर्य परिवार होली मंगल मिलन .....

ऐतिहासिक संस्था आर्य समाज की थी और आर्य समाज की रहेगी, आपने अक्टूबर 2025 में दिल्ली में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की घोषणा करते हुए बताया कि आर्य समाज के 150 वर्षों के इतिहास में यह सबसे बड़ा आयोजन होगा, इसकी तैयारी आर्यजन आज से ही प्रारम्भ कर दें। आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस पर मुंबई में 29, 30 मार्च के विशाल आयोजन और 6 अप्रैल तालकटोरा स्टेडियम दिल्ली में आयोजित होने वाले कार्यक्रम का भी आमंत्रण दिया। पूरे कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज की महिलाओं और बच्चों ने किया।

होली मंगल मिलन समारोह में आर्ष गुरुकुल पौंधा, देहरादून के आचार्य धनंजय जी को ब्रह्मचारी आचार्य राज सिंह आर्य स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित घर घर यज्ञ, हर घर यज्ञ के माध्यम से सैकड़ों घरों में प्रशिक्षण प्राप्त करके यज्ञ कराने वाली महिलाओं ने सामूहिक मंत्र पाठ किया और उन्हें इस श्रेष्ठ कार्य के लिए सम्मानित करके प्रोत्साहित किया। आर्य समाज की विश्व को देन विषय को आधार बनाकर दलितोद्धार के लिए आर्य समाज द्वारा किए गए जूते विक्री के ऐतिहासिक सच्ची घटनाओं पर नाटिका देखकर सभी स्तब्ध रह गए और सभी ने महर्षि दयानंद और आर्य समाज की जय जयकार की। इसके उपरांत संयोजक समिति के सभी अधिकारियों ने पुष्पवर्षा की और एक दूसरे को होली की शुभकामाएं दी, स्वादिष्ट और स्वस्थवर्धक भोजन करके सब लोग प्रस्थान कर गए।

**-संपादक**


**''महर्षि दयानन्द को आपरेटिव अर्बन थ्रिफ्ट एंड क्रेडिट सोसाइटी लि.''**




सभी सम्मानित सदस्यों को जानकर हर्ष होगा की आपकी सोसाइटी प्रगति की ओर बढ़ रही है। गत कार्यकारिणी बैठक में निर्णय लिया गया है कि हम आपके परिवार के सदस्यों और परिचित व्यक्तियों को भी सदस्य बनाने जा रहे हैं। इस अवसर को ''पहले आओ - पहले पाओ'' के आधार पर सीमित 100 सदस्यता के लक्ष्य के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

सदस्यता के लिए आवश्यक दस्तावेज और औपचारिकताएं निम्नलिखित हैं।

- सदस्यता फॉर्म
- 2 पासपोर्ट साइज फोटो
- आधार कार्ड / पैन कार्ड
- न्यूनतम 4 शेयर (प्रति शेयर ₹ 500)
- कंपल्सरी डिपाजिट (न्यूनतम 200 प्रति माह)
- एडमिशन फीस ₹ 100/-

सदस्यता ग्रहण करने के लिए निम्न नंबर पर संपर्क करे-
Phone No. : 011-44775498/ 9311413920
Email id : swamidayanandsociety@gmail.com


## आर्य सन्देश पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

**फार्म 4 नियम 8**

**(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)**

| | | |
|---|---|---|
| **प्रकाशक का नाम** | : | दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001 |
| **प्रकाशन की अवधि** | : | साप्ताहिक |
| **प्रकाशन का समय** | : | प्रति बृहस्पतिवार, शुक्रवार एवं शनिवार |
| **मुद्रक का नाम** | : | धर्मपाल आर्य |
| **क्या भारत का नागरिक है** | : | हाँ |
| **मुद्रक का पता** | : | दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड,नई दिल्ली- 110001 |
| **क्या भारत का नागरिक है** | : | हाँ |
| **प्रकाशक का पता** | : | पूर्ववत् |
| **सम्पादक का नाम** | : | धर्मपाल आर्य |
| **क्या भारत का नागरिक है** | : | हाँ |
| **सम्पादक का पता** | : | पूर्ववत् |
| **उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1% से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों** | : | दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001 |

मैं धर्मपाल आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है।

*- धर्मपाल आर्य, प्रकाशक एवं मुद्रक*

## आर्यसमाज मन्दिर द्वारका नई दिल्ली के

# भवन निर्माण हेतु सहयोग की अपील

अत्यंत हर्ष के साथ आपको सूचित कर रहे हैं कि परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य समाज मंदिर द्वारका, नई दिल्ली को डी.डी.ए. द्वारा द्वारका सैक्टर-17 में 400 वर्ग मीटर का प्लॉट मिल गया है। जिस पर आर्य समाज द्वारका के भव्य भवन निर्माण आरम्भ किया जाना है। बंधुओं, आर्य समाज द्वारका को आपके तथा आपकी संस्थान के सहयोग की अत्यंत आवश्यकता है। अतः आपसे अनुरोध है पवित्र कार्य को पूरा करने में आर्य समाज मंदिर द्वारका का सहयोग करें तथा अपने परिवार/मित्रों/रिश्तेदारों/ सोसायटी इत्यादि को भी आर्थिक सहयोग करने के लिए प्रेरित करें। आप अपना सहयोग सीधे निम्नांकित बैंक खाते में/अथवा स्कैन कोड के माध्यम से प्रदान कर सकते हैं-

**ARYA SAMAJ TEMPLE SOCIETY SECTOR 11**
**A/C No. 4447000100113452 IFSC: PUNB0444700**
**PUNJAB NATIONAL BANK, SEC -10 DWARKA, DELHI**

-: निवेदकः-

**आर्य समाज मंदिर द्वारका**, 9811888707, 9560631667, 9899444347

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 24 मार्च, 2025 से रविवार 30 मार्च, 2025

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 27-28-29/03/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 26 मार्च, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती
150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष
के ऐतिहासिक अवसर पर

साप्ताहिक
# आर्य सन्देश

## 150वां आर्यसमाज स्थापना वर्ष विशेषांक का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं एवं सम्मापित पाठकों को जानकर हर्ष होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर साप्ताहिक आर्य सन्देश के विशेषांक **"150वां आर्य समाज स्थापना वर्ष"** का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसमें महर्षिकृत सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथ, महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, सेवा कार्य, उनके जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग, आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास, आर्य समाज द्वारा किए गए विभिन्न सफल आंदोलन, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण आदि विषयों पर शोधपरक लेख, कविताएं, रचनाएं, प्रेरक प्रसंग एवं संस्मरण आदि प्रकाशित किए जाएंगे।

अत: समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों, भजनोपदेशकों एवं कवि महानुभावों से निवेदन है कि उपरोक्त विषयों पर अपने मौलिक एवं अप्रकाशित लेख एवं रचनाएं प्रकाशनार्थ भेजने की कृपा करें। इसके साथ ही समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, विद्यालयों, गुरुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं, आर्य प्रतिष्ठानों और उद्योगपति परिवारों से सहयोग रूप में विज्ञापन भी सादर आमन्त्रित किए जाते हैं।

विशेषांक का आकार 23x36x8 (A4 Size) होगा एवं विज्ञापन दर निम्न प्रकार हैं -

| विज्ञापन का आकार | विज्ञापन दर (रंगीन) | विज्ञापन दर (श्याम-श्वेत) |
|---|---|---|
| पूरा पृष्ठ | 10000/- रुपये | 7500/- रुपये |
| आधा पृष्ठ | 5000/- रुपये | 4000/- रुपये |

इसके साथ ही **कवर पृष्ठ विज्ञापन - अन्तिम पृष्ठ हेतु 51000/-** रुपये एवं **कवर पृष्ठ 2 एवं 3 हेतु 31000/- रुपये** की की सहयोग राशि निर्धारित की गई है।

कृपया अपना विज्ञापन सहयोग एवं प्रकाशनार्थ सामग्री **'आर्य सन्देश साप्ताहिक'** के नाम **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें या **aryasandeshdelhi@gmail.com** पर ईमेल करें। - ***सम्पादक***

*प्रतिष्ठा में,*

आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृति योजना

**आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2025**

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों की लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- परीक्षा ऑनलाइन बहुकल्पिक प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान, गणित और साधारण विज्ञान पर आधारित होगा।

आवेदन आरंभ की तिथि : 01-04-2025

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172
E-mail: dss.pratibha@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह